विचार बिन्दु

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है, क्षमा पवित्रता है, क्षमा ने ही संपूर्ण जगत को धारण कर रखा है। –वेदव्यास

बैड बैंक क्या जादूई छड़ी साबित होगी

केंद्र सरकार ने बैंकों के बड़ी संख्या में कर्जों के न चुकने की समस्या के हल के लिए के दो कंपनियां बनाई हैं। एक कंपनी बैंक का डूबा हुआ कर्ज़ खरीदेगी और ये सरकारी कंपनी होगी। दूसरी कंपनी आंशिक रूप से निजी होगी और वो कर्ज़ लेने वाले की संपत्ति बेचने की कोशिश करेगी। व्यावसायिक बैंकों द्वारा संपत्ति के अपेक्षित मूल्य और संपत्ति बेच कर मिले कुल पैसे के बीच जो फर्क रहेगा वो सरकार चुकाएगी। अब यह सवाल उठ रहा है कि भारतीय बैंकों के साथ जुड़ी इस प्रक्रियागत समस्या के निदान के लिए सामान्य व्यवहार में बैड बैंक कहलाने वाली यह संस्था क्या कोई जादू की छड़ी साबित होगी?

बैड बैंक संपत्ति के पुनर्निमाण के लिए बनी कंपनी होती है जो बैंकों से एक तय कीमत पर कर्ज़ खरीद लेती है। इसके बाद वो कर्ज़ लेने के लिए दी गई गारंटी बेचती है, या फिर दिवालिया हुई कंपनी की संपत्ति बेचती है। माना जाता है कि इन्हें बेचने से जो पैसा मिलता है उससे कुछ हद तक बैंकों के कर्ज़ की वसूली हो जाती है। ये पहली बार नहीं है कि जब भारतीय बैंक डूबे कर्ज़ की मुश्किल से परेशान हैं और उन्हें बैड बैंक की ज़रूरत पड़ी है। दरअसल, बीते दो दशकों में इस तरह की 28 निजी कंपनियां बनी लेकिन कर्ज़ वसूली के हालात नहीं बदले। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये काम उतना आसान नहीं होता जितना ऊपर से लगता है। संपत्ति के मूल्य पर बैंकों का सहमत होना आसान नहीं होता। जैसे मौजूदा तारीख में कर्ज का मूल्य क्या है, कर्ज़ लेने वालों ने बैंक को जो गारंटी दी है उसका आज क्या मूल्य है। फिर बैंक को इस बात के लिए राज़ी करना कि वो सस्ते में घाटा सह कर कर्ज़ बेचे। ये अपने आप में मुश्किल काम है क्योंकि कर्ज़ पर पैसा देने में तो बैंक तेज होते हैं, लेकिन उसी धन की वसूली और डूबे कर्ज़ की भरपाई में वे उतने काबिल साबित नहीं होते।

बैंकों से कर्ज़ ली हुई डूबने वाली कंपनियों में ज्यादातर लोहा और स्टील, विमानन, खनन, सड़क, बिजली और दूरसंचार कंपनियां शामिल हैं। इन 12 बड़ी कर्ज़ न चुका पा रही कंपनियों को द डर्टी डज़न के नाम से भी जाना जाता है। रियल इस्टेट के काम में लगी कई कंपनियां इनमें शामिल हैं। सामान्य हालत में जब अर्थव्यवस्था अपने उरुज़ पर हो तब इन कंपनियों की संपत्तियां बेच कर कर्ज़ की भरपाई की जा सकती है, लेकिन कोरोना की मार झेल रही अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी पड़ चुकी है और ऐसे में इन्हें बेच कर अधिक कुछ मिल पाएगा ऐसा नहीं लगता। कोरोना काल से पहले भी हमारे देश की बैंकिंग व्यवस्था लंबे समय से इन परेशानियों को भुगत रही है। इसीलिए इन्हें दूर करने के लिए सरकार ने बैड बैंक के उपायों की घोषणा की है।

भारत में साल 2006 और 2008 के बीच बैंकों पर कर्ज़ का बोझ उस समय बढ़ना शुरू हुआ जब देश की अर्थव्यवस्था में उछाल था और बैंकों से कर्ज़ लेना आसान हो गया था। भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर रहे सी. रंगराजन का भी कहना है कि "आज जो कर्ज़ डूब गया है उसके बीज अच्छे वक्त में पड़े थे।" बैंकिंग व्यवसाय के जानकार मानते हैं कि अच्छे वक़्त में बैंकों ने तर्कहीन तरीके से अधिक पैसे बांटे। तेज़ी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था, क्रेडिट ग्रोथ में बढ़ोतरी, कम महंगाई और वित्तीय घाटे में कमी के कारण कंपनियां और बैंक दोनों ही जोखिम उठाने को तत्पर थे। कई बार आत्मविश्वास से भरे बैंकरों ने कर्ज देने के मामले में पूरी सतर्कता बरतने में भी चूक की। दूसरी तरफ भारतीय पूंजीपतियों ने अपनी परियोजनाओं के वित्तपोषण के वास्ते लिए बैंक के कर्ज़े का इस्तेमाल डेट और इक्विटी के रूप में भी किया। कंपनी के लिए इक्विटी लाना पूंजीपति का काम होता है न कि बैंक का। यहां संतुलन बिगड़ गया।

देश के क्रेडिट और जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात को देखा जाए तो ये 60 फीसदी पर है, और काफी कम है, लेकिन वह कर्ज़ डूबने के मामले में ये दुनिया के अग्रिम पंक्ति वाले कुछ देशों में शामिल है। सरकारी बैंकों के डूबते कर्ज़ यानी एनपीए की स्थिति कितनी ख़तरनाक है, इसकी स्थिति का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि साल 2013 से साल 2017 तक इसमें 311 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी हुई और इसका आंकड़ा 1.55 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर साढ़े छह लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। हालांकि निजी बैंकों की हालत भी बेहतर नहीं हैं। उनका एनपीए का आंकड़ा 2013 के 19,986 करोड़ रुपये के मुकाबले 2017 में बढ़कर 73,842 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। एनपीए को समझने से पहले ये जान लेना ज़रूरी है कि बैंक काम कैसे करते हैं? इसे यूं समझ सकते हैं कि जैसे बैंक में अगर 100 रुपये जमा है तो उसमें से 4 रुपये (सीआरआर) रिज़र्व बैंक के पास रखना जरूरी होता है। अभी 19.5 प्रतिशत एसएलआर के हिसाब से साढ़े 19 रुपये बॉन्ड्स या सोने के रूप में रखना होता है। बाकी बचे हुए साढ़े 76 रुपयों को बैंक कर्ज़ के रूप में दे सकता है। इनसे मिले ब्याज से वे अपने ग्राहकों को उनके जमा पर ब्याज का भुगतान करते हैं और बचा हुआ हिस्सा बैंक का मुनाफ़ा होता है।

बैंकिंग व्यवसाय के जानकार मानते हैं कि अच्छे वक़्त में बैंकों ने तर्कहीन तरीके से अधिक पैसे बांटे। तेज़ी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था, क्रेडिट ग्रोथ में बढ़ोतरी, कम महंगाई और वित्तीय घाटे में कमी के कारण कंपनियां और बैंक दोनों ही जोखिम उठाने को तत्पर थे। कई बार आत्मविश्वास से भरे बैंकरों ने कर्ज देने के मामले में पूरी सतर्कता बरतने में भी चूक की।

रिज़र्व बैंक के नियमों के अनुसार बैंकों को अगर किसी परिसंपत्ति (एसेट) यानी कर्ज़ से मिलने वाली ब्याज की आय मिलनी बंद हो जाती है तो उसे एनपीए माना जाता है। बैंक ने जो धनराशि उधार दी है, उसके मूलधन या ब्याज की किश्त अगर 90 दिनों तक उसे वापस नहीं मिलती तो बैंकों को उस लोन को एनपीए में डालना होता है। कोई लोन खाता निकट भविष्य में एनपीए बन सकता है या नहीं, इसकी पहचान के लिए रिज़र्व बैंक ने नियम बनाए हुए हैं जिनके तहत बैंकों को उनके लोन खातों को स्पेशल मेंशन अकाउंट (एसएमए) के तौर पर चिन्हित करना होता है। अगर किसी लोन खाते में मूलधन या ब्याज की किश्त का भुगतान निर्धारित तिथि से 30 दिनों के भीतर नहीं होता है तो उसे एसएमए-0 कहा जाता है। अगर भुगतान 31 से 60 दिनों तक न हो तो इसे एसएमए-1 कहा जाता है। अगर मूलधन या ब्याज का भुगतान 61 से अधिक दिनों तक न हो तो उसे एसएमए-2 कहा जाता है। किसी लोन खाते को एनपीए घोषित करने के बाद बैंक को उस एनपीए खाते को तीन श्रेणियों - सब स्टैंडर्ड एसेट्स, डाउटफुल एसेट्स और लॉस एसेट्स के रूप में श्रेणीबद्ध करना होता है। जब कोई लोन खाता एक साल या इससे कम अवधि तक एनपीए की श्रेणी में रहता है तो उसे सब स्टैंडर्ड असेट्स कहा जाता है, एक साल तक सब स्टैंडर्ड असेट्स की श्रेणी में रहता है तो उसे डाउटफुल असेट्स कहा जाता है। जब बैंक यह मान लेता है कि कर्ज़ अब वसूल नहीं हो सकता तो उसे लॉस असेट्स की श्रेणी में डाल दिया जाता है।

रिज़र्व बैंक ने फ़रवरी में एनपीए नियम कड़े करते हुए किसी कर्ज़ की अदायगी में चूक के मामले में बैंकों के लिए 180 दिन के भीतर उसका समाधान निकालना अनिवार्य कर दिया था। ऐसा नहीं होने की स्थिति में उस खाते को दिवालिया प्रक्रिया के तहत आगे बढ़ाना होता है। नए नियम के तहत 2,000 करोड़ रुपये या इससे ज्यादा के लोन डिफॉल्ट के मामलों में बैंक अधिकारियों को 180 दिन के भीतर समाधान यानी प्रोविजनिंग की योजना तैयार करनी होती है। ऐसा नहीं होने पर उसे दिवालिया प्रक्रिया में ले जाना होता है। जानकारों का कहना है कि सरकारी बैंकों के तिमाही नतीजों में जो हज़ारों करोड़ रुपये का जो घाटा नज़र आ रहा है वह इसी नियम की वजह से है। अब बैंकों को उसकी प्रोविजनिंग यानी समाधान के लिए सिर्फ़ छह महीने दिए गए हैं, इसलिए बैंकों को इन एनपीए को घाटे के रूप में दिखाना ही होगा। विशेषज्ञों का कहना है कि इसका मतलब ये हरगिज़ नहीं है कि बैंकों का ये कर्ज़ डूब गया है और अब वसूल नहीं होगा। मगर बैंकिंग मामलों पर नज़र रखने वाले यह भी मानते हैं कि बैंकों के कर्ज़ देने की प्रक्रिया में खामियां हैं और इन्हें दुरुस्त किया जाना चाहिए। सरकारी बैंकों को सही मायनों में स्वतंत्र होना पड़ेगा और गैर जरूरी राजनैतिक हस्तक्षेप को अस्वीकार करना होगा। उन्हें अपने कामकाज के तरीके बदलने होंगे और कर्ज़ देते वक्त बाज़ार की स्थिति और जोखिम को सही तरीके से आंकते हुए अपने को बेहतर कर्ज़दाता बनाना होगा। साथ ही उन्हें ये भी देखना होगा कि वे कितना जोखिम उठाने के लिए तैयार हैं। रिज़र्व बैंक के कड़े नियंत्रण से इस दिशा में मदद मिलेगी। साथ ही कर्ज़ देने के मामले में बैंकों को अधिक पारदर्शिता अपनानी होगी। पुराने न चूक रहे कर्जों के भारी बोझ को काम करने के लिए वसूली की बैड बैंक की व्यवस्था एक आगे का कदम है। केन्द्रीय वित्त मंत्री ने इस साल के बजट में बैड बैंक के लिए 20 हजार करोड़ रुपयों की घोषणा की थी। अब इस योजना की धरती पर घोषणा करते हुए वित्त मंत्री ने नई कंपनी को 30,600 करोड़ रुपये की सॉवरेन गारंटी देने का कहा है ताकि बैंकों की बैलेंसशीट सुधारे और उन्हें नए कर्जे देने में सुविधा हो।

–अतिथि संपादक
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

दया मृत्यु से समाज सेवा

इच्छा मृत्यु का कैसा विकृत रूप हो गया है। एक संभ्रांत महिला, जो अपने आपको समाज सेविका कहती हैं, की इच्छा है कि अस्पताल में वर्षों से भर्ती एक रोगिणी महिला को मौत की नींद सुला दिया जाय। समाज सेविका की इस इच्छा को 'इच्छा मृत्यु' की याचना माना गया। समाज सेविका की यह मांग 'दया' के वशीभूत है- दया मृत्यु। मृत्यु की इच्छा रोगिणी की नहीं है। वह तो इस हालत में ही नहीं है कि अपनी इच्छा व्यक्त कर सके। बेहोश नहीं है, होश में है, बस इतने से होश में कि कोई खिला दे तो खा ले, पानी पिला दे तो पी ले। करवट बदलवा दे तो बदल ले, वरना पड़ी रहे- जैसे छोटा सा शिशु। गले से कुछ आवाज निकालने के अलावा किसी प्रकार की अभिव्यक्ति करने में असमर्थ। वर्षों से वह इसी अवस्था में है। समाज सेविका के अनुसार यह भी कोई जीवन है? दूसरों पर सर्वथा निर्भर ऐसे जीवन की सार्थकता क्या है? दुर्गति है। अत: समाज सेविका ने उच्चतम न्यायालय में गुहार लगाई कि रोगिणी का खाना-पीना बंद कर उसे मृत्यु की नींद सुलाने के निर्देश दिये जायें। रोगिणी की यह हालत एक बहशी क्रूर कुकर्मी ने की थी। समाज सेविका उस क्रूर कुकर्म से इतनी व्यथित है कि ऐसे विक्टिम के लिए मृत्यु की इच्छा और गुहार को वे दया की संज्ञा देती हैं और न्यायालय दया मृत्यु पर विचार करता है। यह कैसी दया कि एक जीती-जागती, शिशु समान अधेड़ महिला को भूखी-प्यासी रख मार दिया जाय, वह भी इसलिए कि वह प्रतिरोध नहीं करेगी या कर नहीं पायेगी। उस कुकर्मी की क्रूरता और समाज सेविका के तथाकथित 'करुण' कृत्य में क्या फर्क है? विडंबना की पराकाष्ठा यह है कि रोगिणी की वर्षों से सेवा करने वाली अस्पताल की नर्सों को कोई गिला नहीं हैं। रोगिणी का शिशु के समान लालन पालन कर वे खुश हैं, सेवा भाव से तृप्त हैं।

समाज सेवा का ऐसा ही जज्बा लिए थे अमेरिका के डा. जैक केवोरकिएन। रोग से दुखी व्यक्ति (कौन नहीं होता) अगर दुख से निजात पाने के लिए मरने की इच्छा जाहिर करता है तो उसको मरने में सहयोग करना या उसे मारना, वे अपना चिकित्सकीय दायित्व मानते थे। वे खुलेआम प्रचार करते थे कि ऐसे रोगी उनसे सम्पर्क करें। डा. जैक उनसे लिखवाते कि वे इच्छा मृत्यु चाहते हैं और फिर दवाओं का मृत्यु-मिश्रण बना कर उन्हें देते या स्वयं लगाते। मौत के माध्यम से व्यथा से मुक्ति दिलाने को वे महान कार्य की संज्ञा देते थे। आत्महत्या में सहयोग सम्बन्धी कानून बड़े लचर थे- डा. जैक के अनुसार दकियानूसी और बकवास। 129 रोगियों को मौत के मुंह में सुलाने के बाद भी कानूनन उनके खिलाफ कुछ नहीं किया जा सका। इससे वे अति उत्साहित और आक्रमक हो गये। मेडिकल काउंसिल द्वारा उनका लाईसेंस रद्द करने पर भी वे हतोत्साहित नहीं हुए। उन्होंने 130वें रोगी को अपने होथों मृत्यु का इन्जेक्सन लगाते हुए एक वीडियो फिल्म बनाई और उसे बड़े शान से प्रसारित किया। बड़बोले डा. जैक ने उस प्रसारण में कानून व्यवस्था को उनके खिलाफ कार्यवाही करने को ललकारा।

आत्महत्या और इच्छा मृत्यु सम्बन्धी कानून के तहत नहीं, मृत्यु कारित करने के सामान्य कानून के तहत मुकदमा चला। उनके पास प्रेक्टिस करने का लाईसेंस नहीं था। न वे मृत्यु कारित करने वाली दवायें रखने या किसी को देने के लिए अधिकृत थे। उनके पुराने कृत्यों के जघन्य पहलू भी उजागर हुए। उन्हे दूसरे दर्जे की हत्या का दोषी पाया गया और 10 वर्ष के लिए जेल भेज दिया। लेकिन 'डाक्टर मौत' ने कहा उन्हें कोई पछतावा नहीं है। अत: न्यायाधीश ने यह भी लिखा कि सजा में वे किसी प्रकार की राहत के अधिकारी नहीं होंगे।

मौत के सौदागर डा. जैक की 'समाज सेवा' और दया मृत्यु की मुहिम का अंत जेल में हुआ। चिकित्सकों में दया मृत्यु की मानसिकता को बढावा देना या मान्यता देना खतरनाक है। ऐसी मानसिकता वाला किस पर ऐसी दया करेगा, इस पर नियत्रंण नहीं किया जा सकता। चिकित्सा जहां धन्धा है, कब दया मृत्यु धन्धा बन जायगी कोई कुछ नहीं कहा जा सकता। समाज सेवा तो जानामाना धन्धा है ही। अपने स्वार्थ के लिए रोगी की बेचारगी का लाभ उठा कर उसे मरणोन्मुख कर देना निश्चित ही पाशविक और जघन्य कर्म है।

मेरे दागे-ए-दिल है रोशनी,
उसी रोशनी से है जिंदगी
मुझे डर है ऐ मेरे चारागर
(चिकित्सक), ये चराग तू ही बुझा न दे।
मुझे छोड़ दे मेरे हाल पर, तेरा
क्या भरोसा है चारागर
ये तेरी नवाजिशे-मुख्तसर, मेरा
दर्द और बढा न दे।-शकील बदायूंनी

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

मण्डावा : हास्य कवि सम्मेलन में छूटे हंसी के फव्वारे

- विवादों में संत व राजनीति के गिरते स्तर पर भी जमकर कटाक्ष किये
- राजस्थान के विभिन्न जिलों से आए कवियों ने अपनी रचनाओं से जमकर वाहवाही लूटी

मण्डावा, (निसं)। नगर पालिका चौक में श्री महान दुर्गा पूजा महोत्सव पर देर रात तक हास्य और व्यंग्य का दौर चला। मौका था कवि सम्मेलन का। इसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों से आए कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं से जमकर वाहवाही लूटी। उन्होंने अपनी रचनाओं में कभी हंसाया तो कभी देश की स्थिति पर व्यंग्यबाण चलाए। विवादों में संत व राजनीति के गिरते स्तर पर भी जमकर कटाक्ष किए। दर्शक दीर्घा तालियों की गडगडाहट से गूंजता रहा। कवि सम्मेलन में हरीश हिन्दुस्तानी सुप्रसिद्ध हास्य कवि मंच संचालक), पीके मस्त(हास्य कवि सब टी. वी.लाफ्टर चैनल शो के विजेता), नैना नसीब (कोटा की सुप्रसिद्ध प्रेम श्रृंगार की कवयित्री), कैलाश कविया (राजस्थानी गीतों के गीतकार), नगेंद्र शर्मा (देशभक्ति के कवि) आदि द्वारा हास्य,भक्ति, प्रेम व देशप्रेम आदि कवियों ने एक से बढ कर एक मनोरंजक हास्य कविताओं की झडी लगा दी। राजनीतिक परिदृश्य पर आधारित अरे खुद को सोचकर देखो नकारे जा रहे हो क्यों, भले मानुष मगर नेता पुकारे जा रहे हो क्यों, की कविता की आवाज गूंजी तो श्रोताओं के अंर्तमन को झंकृत कर दिया। नैना नसीब ने नारी सशक्तीकरण पर अपनी कविता सुनाकर वाहवाही लूटी। कवि आंतकियों पर आफत आ जाय खुदा करें उनके लिए कयामत आ जाय की जब सुर निकाली तो लोगों ने खुब सराहा। दुखित महतो ने हमने तुझे पुकारा तुमने मुझे नकारा की प्रस्तुति की।

नगरपालिका चौक में हुए कवि सम्मेलन में प्रस्तुति देते कलाकार।

कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं से खूब तालियां बटोरी। कार्यक्रम में पूर्व पालिकाध्यक्ष सज्जन मिश्रा, नपा चेयरमैन नरेश सोनी, नपा उपाध्यक्ष नवाब खत्री, भाजपा मीडिया प्रभारी संदीप शर्मा, पार्षद हरिराम चेजारा, नंदकिशोर यादव, जाबीद मौम, व्यापार मण्डल के चीफ संजय रामगढि या, रामस्वरूप देवडा, घनश्याम चोटिया, पं. हरिराम शर्मा, मदन ढाका, विमल बटवाल, पंकज - पवन शर्मा, मधु स्वामी, नरोतम चेजारा, ललित - मनोज सोनी सहित सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थें। शिक्षक सुभाषचन्द्र बावलिया ने मंच का संचालन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित करने के बाद कार्यक्रम का समापन किया गया।

350 सालों में दूसरी बार नहीं होगा रावण दहन

रींगस, (निसं)। शहर में साढे तीन सौ सालों के इतिहास में दूसरी बार ऐसा है जब दशहरा मैदान में रावण दहन नहीं होगा। इससे पहले पिछले साल भी दशहरा पर्व नहीं मनाया गया। वहीं हाईटेक का रूप ले चुका रींगस दशहरा महोत्सव का इतिहास कम रोचक नहीं है। युवा विकास मंच के अध्यक्ष गोविन्द शर्मा ने बताया की रींगस के दशहरा मैदान में पहले दशहरा महोत्सव हुलहुल गट्टे के रूप में मनाया जाता था। इसके बाद 1977 में रावण दहन की परम्परा शुरू हुई।

इन साढे तीन सौ सालों में दशहरा पर्व कभी बन्द नहीं हुआ। लेकिन कोरोना के दंश ने इन दो सालों में रावण दहन को रोक लिया। रींगस का दशहरा महोत्सव पहले हुलहुल गट्टे के रूप में मनाया जाता था। 1976 तक लोग काली मिट्टी के छोटे छोटे गोले बनाते उनके उपर मोरपंख लगाकर सुखा लेते थे। दशहरे के दिन रावण दहन स्थल पर एक मटके पर कलर कर उसे रावण का रूप दे देते थे।

इसके बाद लोग अपने घरों से मोरपंख लगे मिट्टी के गोले लाकर मोरपंख से पकड़ कर रावण को मारते। इससे कई बार निशाना चूक जाने से मिट्टी के गोले आमजन को लगते। इससे कई लोगों का सिर फूट जाता। इसके बाद मिट्टी के मटके का बना रावण जब टूट जाता तो लोग उसके टूकडे उठाने के लिए लोग एक दूसरे से आगे निकलने की होड करते। मिटटी के बने रावण के अवशेष से लोग बच्चो के गले में ताबिज बना कर बांध देते।

आम आदमी के आर्थिक जीवन में सम्पूर्ण बदलाव से ही आत्मनिर्भरता संभव

कोरोना के कारण आर्थिक विकास के स्तर डावाडोल स्थिति में फहुंचने के बाद भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत बनाने की बात जोरों-शोरों से की। आज यह विश्लेषण करना ज्यादा उचित है कि भारत की इस संबंध में योजना क्या है? क्या भारत मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में बढ़ोतरी करेगा? क्या पिछले दो दशकों से अर्थ व्यवस्था को चलाने वाले क्षेत्र सर्विस सेक्टर को और तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा या कृषि क्षेत्र को मजबूती देकर ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सक्षम बनाया जाएगा?

आत्म निर्भर भारत के अंतर्गत भारत के आम आदमी के आर्थिक जीवन स्तर में आमूलचूल परिवर्तन होने चाहिए। 90 के आर्थिक सुधारों के माध्यम से अर्थ व्यवस्था में वैश्वीकरण तथा निजीकरण को प्रोत्साहित किया गया था। इसके माध्यम से आम व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक सहायता दी गई। अब चाहे वो रोजगारों की उपलब्धता एक माध्यम बना हो या प्रति व्यक्ति आय बढ़ने के बाद क्रय क्षमता के विकास का बनना। वर्ष 2005 से लेकर अब तक आम आदमी ने अपनी लगातार बढ़ती आर्थिक आय को अपनी क्रय क्षमता के उपभोग में ही लगाया है। । परंतु यह भी हकीकत है कि आम आदमी अपने आर्थिक जीवन स्तर पर कई दृष्टिकोण से लगातार शोषित भी हुआ है। बढ़ती महंगाई, विभिन्न प्रकार के करों की दरें, जमाओं पर गिरती ब्याज की दरें, वित्तीय ऋण की दरों का महंगा होना आदि ऐसे कई कारण आसानी से समझे जा सकते हैं। अब समय आ गया है सरकार व आम आदमी एक साथ समाज के आर्थिक विकास में पूर्ण बदलाव लाने को एक मुख्य उद्देश्य बनाएं तभी वास्तविकता में आत्म निर्भर बना जा सकता है।

पिछले वित्तीय वर्ष में दो कोरोना की लहरों के बीच जब लोकडाउन का समय था तो क्यों आम व्यक्ति को और कंपनियों को आर्थिक नुकसान हुआ? इसमें एक बहुत सीधा संबंध है। आम व्यक्ति ने अपनी आर्थिक आय में गिरावट के कारण अपनी क्रय क्षमता को नियंत्रित कर लिया जिस कारण कंपनियों की बिक्री में कमी हुई तथा उनका आर्थिक मुनाफा गिरा। इसका एक नकारात्मक पक्ष जो सीधा नहीं दिखता है वो यह है कि मुनाफा गिरने के बाद कंपनियों ने लागत नियंत्रण को एक मुख्य मुद्दा बनाया तथा उस कारण भारतीय समाज में एकाएक बेरोजगारी बढ़ी, जिसकी आर्थिक चोट प्रत्यक्ष रूप से एक आम आदमी को भी लगी। इस संदर्भ में यह बात भी आम आदमी ने महसूस की कि उसके पास कोराना जैसी महामारी में उपजे आर्थिक अनिंश्चताओं से लड़ने के लिए सुरक्षित आर्थिक निवेश नहीं है। उसकी आर्थिक बचत लगातार कम हो रही है। कारण बढ़ती महंगाई दर तथा अत्यधिक आयकर की दरें है। क्यों यह नहीं संभव की आयकर की दरों में कमी के माध्यम से आर्थिक बचत को बढ़ाया जाए। अगर ऐसा होता है तो यह भी संभव है कि बढ़ी हुई आर्थिक बचत आम व्यक्ति या तो अपनी क्रय क्षमता को बढ़ाने में करेगा अथवा उसे आर्थिक निवेश में ही उपयोग लाएगा। आप जरा देखिए कि आजकल भारत के मोबाइल एप्लीकेशन सेगमेंट में बड़ी तेजी के साथ दबदबा बढ़ रहा है। याद रहे कि पिछले साल भारत सरकार ने चीन के 59 मोबाइल एप पर रोक लगा दी थी। उस समय तक चीन की भारत के मोबाइल एप्लीकेशन के बाजार में 44 प्रतिशत की हिस्सेदारी थी। आज स्थिति बिल्कुल विपरीत हो चुकी है। देश की शीर्ष 10 एप्लीकेशन कंपनियों में 60 प्रतिशत का स्वामित्व भारतीय निर्माताओं का है। गूगल प्ले स्टोर पर 5 प्रतिशत से अधिक मोबाइल एप्लीकेशन के निर्माता भी भारतीय हैं।

चीन के टिकटॉक को भारतीय एप्लीकेशन एमएक्स, टकाटक, मोज, शेयरचैट, जोश ने पूर्णतया खत्म कर दिया है। चीन के गेमिंग एप्लीकेशन पब्जी मुंबई की कंपनी के गेमेशन द्वारा बनाया गया लूडो किंग नक लक ली है। गेमेशन कंपनी के द्वारा बनाए गए चार मोबाइल एप्लीकेशन अब तक करीब 63 करोड़ बार डाउनलोड हो चुके हैं। अगस्त 2021 तक गूगल प्ले स्टोर पर वैश्विक स्तर पर 19323 गेमिंग एप्लीकेशनस थे, जिनमें भारतीय निर्माताओं की हिस्सेदारी 4 प्रतिशत थी। भारतीय निर्माताओं की गेमिंग एप्लीकेशन पर कोई भी डाउनलोड शुल्क नहीं है। विज्ञापन से उनको 86 प्रतिशत की वित्तीय आय हो रही है जबकि यही आंकड़ा वैश्विक स्तर पर मात्र 73 प्रतिशत है।

'आत्म निर्भर भारत' की सोच देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाएगी। वर्तमान नीति निर्धारकों में इस हेतु एक ललक देखने को मिल रही है। इस हेतु बहुत जोरों से कार्य किया जा रहा है, जिसका फायदा आगामी दशकों में भारत को जरूर मिलेगा। हर क्षेत्र में 'आत्म निर्भर भारत' को बनाने के लिए सशक्त नीतियों को तैयार करने की आवश्यकता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि दो ऐसे क्षेत्र हैं जो 'आत्मनिर्भरता' के लिए महत्वपूर्ण स्तंभ है क्योंकि जब ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि समृद्ध होगी तो ग्रामीण भारत भी समृद्ध होगा और तब ही सही मायने में भारत आत्मनिर्भर बनेगा।

–डॉ. पीएस वोहरा
आर्थिक मामलों के जानकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 14 अक्टूबर, 2021

आश्विन मास शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र प्रात: 9:35 तक, धृति योग रात्रि 1:45 तक, बालव करण प्रात: 7:30 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-कन्या, गुरू-मकर, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

रवियोग प्रात: 9:35 से आरम्भ होगा। आज महानवमी व्रत पूजन है, शारदीय नवरात्रा समाप्त होंगे। आज श्री हरि जयन्ती, मन्वादि और आयुध और नवाश्व पूजा है। सरस्वती विसर्जन प्रात: 9:35 के पश्चात है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:55 तक, चर 10:47 से 12:13 तक, लाभ-अमृत 11:13 से 3:05 तक, शुभ 4:31 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:29, सूर्यास्त 5:56

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
परिवार में मांगलिक-धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
मन:स्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव दूर होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

कुंभ
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

मीन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।